प्रातःक्लास 23.2.68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद हैं?

ओमशांति। रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को समझाते हैं। पढ़ाते हैं। योग सिखलाते हैं। योग कोई बड़ी बात नहीं है। जैसे बच्चे पढ़ते हैं ,योग तो जरूर टीचर से लगता ही है ना। बड़ी बात नहीं। योग तो रहता ही है हमको फलाना टीचर पढ़ाते हैं। आप समान बनाते हैं। एमऑब्जेक्ट तो रहती ही है। समझते हैं हम फलाना दर्जा पढ़ रहे हैं। इसमें टीचर को कहना नहीं है कि मेरे साथ योग लगाओ। आटोमेटिकली पढ़ाने वाले साथ योग रहता ही है। सारा दिन तो नहीं पढ़ाते हैं। वह तो जन्मजन्मांतर पढ़ते आये हैं। प्रैक्टिस हो जाती है। यहां तो तुम्हारी यह प्रैक्टिस बिल्कुल नई है। देहधारी टीचर नहीं है। यह तो है विदेही। विदेही टीचर हर 5000वर्ष बाद मिलती है। खुद ही कहते हैं मैं देहधारी टीचर नहीं हूं। इसलिए डिफीकल्टी से याद ठहरती है। अपन को आत्मा समझना पड़े। परमपिता परमात्मा टीचर हमको पढ़ा रहे हैं। यह प्रैक्टिस करनी है। याद तो जरूर करना है। जब तक इम्तहान पास हो। याद करते2 इम्तहान पास हो गया फिर चले जावेंगे घर। इम्तहान पूरा होने से ड्रामा ही फिनिश हो जाता हैं फिर तुम बच्चों को मालूम है हमारी आत्मा में पार्ट भरा हुआ है जो हमको बजाना है। 84जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। यह भी अभी मालूम है। पीछे वहां यह पता नही रहेगा। यहां सब नालेज तुम बच्चों को मिलती है। टीचर ही बैठ सारी नालेज बच्चों को समझाते हैं। जो समझते रहना है और याद भी जरूर करना है। घड़ी2 बाप कहते हैं मनमनाभव। मनमनाभव का अर्थ भी तो है ना। बच्चे समझते हें अक्षर राइट है। बाप खुद भी कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। इसमें टाइम लगता है ना। अपनी जांच करनी होती है। जैसे पढ़ाई में और सब्जेक्ट्स होते हैं ना। हिस्ट्री, हिसाब–किताब, साइंस आदि। स्टुडेंट समझते हैं हम कहां तक पास होंगे। तुम बच्चों की बुद्धि में भी है हम इतने मार्क्स से पास होंगे। अपन को देखना है हम बाप को भूल तो नहीं जाते हैं। बहुत लिखते हैं बाबा माया बहुत घड़ी2 भुला देती है। बहुत माया के तूफान ,विकल्प आते हैं। न समझने कारण लिखते हैं बाबा इसमें पाप तो नहीं लगता है। ऐसे2 संकल्प–विकल्प आते हैं। देखने से खयाल आता है यह करें ,इसमें पाप तो नहीं होगा। बाप कहते हैं नहीं। पाप तब होगा जब कर्मइन्द्रियों से कर बैठेंगे। बाप बार2 समझाते रहते हैं बच्चों को ज्ञान तो है। यह भी जानते हैं सृष्टि का चक्र तो फिरना ही है। तुम हो स्वदर्शनचक्रधारी। मनुष्य थोड़े ही समझते हैं विष्णु और कृष्ण को स्वदर्शनचक्र क्यों दिया है। दिखाते हैं अकासुर–बकासुर को मारा। अब मारने–करने की तो कोई बात ही नहीं। यह तो अपने पाप कटने की बात है। शिवबाबा को भी कहेंगे ना स्वदर्शनचक्रधारी। उनको सारी चक्र का ज्ञान है। आत्मा को अपने बाप से ज्ञान हुआ है। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। स्वदर्शनचक्र धारण कर अपने पापों को भस्म करना है। ज्ञान को धारण कर और अपने 84जन्मों के चक्र को याद करना है। बाप को याद करने से ही पापों का नाश होता है। हरेक को अपनी मेहनत करनी है। ऐसे नहीं कि बाप बैठ दृष्टि देंगे कि इनके पाप कट जाये। बाप यह धंधा बैठ नहीं सकते। बच्चों को तो सबको देखेंगे ही। देखने से वा ज्ञान देने से कोई विकर्म नहीं विनाश होंगे। बाप तो रास्ता बताते हैं ऐसे2 करो तो विकर्म विनाश होंगे। श्रीमत देते हैं। अच्छा, समझो बाप आते हैं आत्मा को समझ देखते हैं ऐसे नहीं कि इससे हमारे पाप कट जावेंगे। नहीं। पाप कटेंगे ही अपनी मेहनत से। ऐसे बाप बैठ करे फिर तो यह एक धंधा हो जाये। बाप समझाते हैं ऐसे2 तुम अपने बाप को याद करो। बाप है ही श्रीमत देने वाला। मेहनत अपनी करनी है। कई समझते हैं फलाने साधु–सन्यासी की दृष्टि ही बस है। कृपा वा आशीर्वाद लेते2 गिरते ही आते हैं। वह क्या करेंगे? वह तो अपने ब्रह्म तत्व को ही याद करेंगे। बाप को साफ रास्ता बताते हैं ऐसे2 करो। गाते भी हैं नंगे आये थे, नंगे जाना है। यह गायन भी इस समय का है। बाप के वर्शन्स फिर भक्ति मार्ग में काम आते हैं। अभी बाप कहते हैं याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। जो जितना याद करेंगे। बाप तो श्रीमत देते हैं। यह भी ड्रामा में उनका पार्ट है। इनको ही मदद कहो। ड्रामा अनुसार श्रीमत गाई हुई है। बाप को मत देनी ही

हैं। कहते हैं अपन को आत्मा समझो। ऐसे नहीं मदद दे कर्मातीत अवस्था को ले जावेंगे। नहीं। टाइम लगता है। बहुत मेहनत करनी पड़ती है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना इसमें बहुत बड़ी अभ्यास चाहिए। वास्तव में माताओं को फुर्सत बहुत रहती है। खाना पकाया, खिलाया यह भागे। कोई धंधा आदि है नहीं। पुरुषों को धंधे का फुर्ना रहता है। अभी तो एक बाप को ही याद करना है। शिवबाबा को याद करते2 लाटरी लेनी है। यह है याद की यात्रा। ताकी सारी जंक निकल जाये। फील होता है फलाना याद में रहते हैं। चार्ट रखते हैं, पुरुषार्थी हैं। जैसे भक्तिमार्ग में दो/तीन घंटा भी बैठ जाते हैं। बहुत भक्त होते हैं। वानप्रस्थी गुरू आदि भी करते हैं ;परंतु उनको भी इतना याद नहीं करते जितना याद देवताओं को करते हैं। वास्तव में देवताओं को याद करना नहीं होता है। न देवताएं कुछ सिखलाते हैं। तुम बच्चों के लिए नई बात नहीं है और लाखों वर्ष की भी कोई बात नहीं। बाप आते ही तब हैं जब स्थापना और विनाश होता है। बच्चे जानते है। यह विनाश तो कल्प2 होता है। कल्प पहले भी यह हुआ था। बाप जो अपने साथ मिलने का जो रास्ता बताते हैं वह कोई नई बात नहीं। बाप कहते हैं मैं कल्प2 आकर यह रास्ता बताता हूं। तुम बच्चों को पता है यह हमारी राजधानी की स्थापना हो रही है। जिन देवताओं की पूजा करते थे उनकी राज्य की स्थापना फिर से हो रही है। 5000वर्ष का चक्र है जो फिरता ही रहता है। लाखों वर्ष की बात हो तो समझा भी न सके। यह किसको भी पता नहीं है। यह चक्र 5000वर्ष का है। तो मनुष्य सुनकर वायरे हो जाते हैं। 84लाख का जन्म हो तो फिर कल्प भी लम्बा हो जाये। भक्तिमार्ग में है ही मिसअंडरस्टैंडिंग। शास्त्रों में क्या बैठ लिखा है। जिसके लिए कहते हैं व्यास भगवान ने लिखा है। गीता में यह बातें नहीं हैं। यह तो बाप बैठ सम्मुख समझाते हैं। भक्तिमार्ग में क्या2 खिलौने बना दिये हैं। खिलौनों से खेलते हैं। बुद्धि कुछ भी नहीं रावण क्या चीज है। क्यों खेलते रहते हैं। माया के मत पर चल रहे हैं। अभी तुम समझते हो यह तो नानसेंस है। रावण को क्या जलाते हैं। कुछ भी समझते नहीं। अभी तुम समझते हो। तुम्हारा नाम ही है स्वदर्शनचक्रधारी। एमऑब्जेक्ट यह खड़ी है। जो बाबा में ज्ञान है वह आत्मा को दिया है। जब ड्रामा का चक्र पूरा होता है तब ही बाप आकर नालेज देते हैं। बाप ही यह कर्म सिखलाते हैं। फिर वाममार्ग में जाने से ही रात शुरू होती है। फिर हम नीचे उतरते ही जाते हैं। सुख कम हो जाता है। तुम्हारी बुद्धि में ज्यों का त्यों सारा चक्र है जैसे बाप की बुद्धि में है। बाकी तुमको पावन बनने लिए ही मेहनत करनी पड़ती है। बुलाते भी इसलिए हैं कि बाबा हम पतितों को पावन बनाने आओ। फिर नालेज भी चाहिए। मनुष्य से देवता बनना है। बाप आते ही हैं तुम बच्चों को राजयोग सिखलाने। दूसरा कोई सिखलाय न सके। सिखलाने आवेगा ही नहीं। तब ही बाप कहते हैं वह सन्यासी आदि कितना गीता सुनाते हैं तो तुम जाकर सुनो क्या सुनाते हैं। फिर उस पर तुमको समझाया जावेगा। क्या2 फाल्तू बातें बैठ शास्त्रों में लिखी है। कृष्ण पर भी कलंक लगाया है। कितनी निंदा की है। तब ही बाप कहते हैं यह न सुनो। यह भी ड्रामा बना हुआ है। फिर भी ऐसा ही होगा। हम किसकी ग्लानी नहीं करते हैं ; परंतु बतलाते हैं क्या2 करते हैं। इनको भक्तिमार्ग कहा जाता है। पाप चढ़ते2 बुद्धि एकदम भ्रष्ट हो जाती है। नाम तो पापात्माओं का भी है ना। पापात्माएं हैं तब तो बाप को बुलाते हैं। बाबा आकर हमको पावन बनाओ। अभी तुम जानते हो हम पुण्यात्मा बन रहे हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर रिपीट होगी। कितनी गुह्य वंडरफुल बातें हैं। न आत्मा को न परमात्मा को जानते हैं। आत्मा भी जो है ,जैसे हैं, जैसा उनमें पार्ट है वह बाप ही बतलाते हैं। वंडर है ना। कितनी छोटी सी आत्मा है। क्या2 उनमें पार्ट भरा हुआ है। सुनने से ही रोमांच खड़ी हो जाती है। ऐसे ढेर आत्माएं देखने में आती है। बहुत झस्मर हो जाती है। सा. होता (है) ;परंतु उनसे कोई फायदा नहीं। यहां तो योग लगाना है। मनुष्य समझते है। बस ,सा. हुआ, हमने मुक्ति पा लिया। पाप भस्म हो गए। यह तो और ही मनुष्य धोखे में रह जाते हैं। समझते हैं ईश्वर का दर्शन हुआ

बस, हमने ईश्वर को पा लिया। बाप हर बात समझाते रहते हैं। दिन प्रतिदिन कहते हैं आज तुमको गुह्य बातें सुनाता हूं। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। बस बाप को और इस चक्र को ही याद करना है। टीचर को भी याद करना है। नालेज को भी याद करना है। याद करते2 जरूर ड्रामा प्लैन अनुसार कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे। जैसे नंगे आये थे वैसे ही फिर नंगे ही जाना ही है। तुम दैवी संस्कार ले जाते हो। वहां कोई यह नालेज नहीं रहती है ;लेकिन संस्कार ले जाते हैं। इसको ही कहा जाता है सहज याद। योग अक्षर ठीक ही नहीं है। योग अक्षर से मनुष्य मूंझ जाते हैं। वह हैं हठयोगी। राजयोग का किसको पता नहीं है। बाप ने ही आकर राजयोग सिखाया है। आगे सुनते थे कि गीता का भगवान ने ही राजयोग सिखाया था ;परंतु उनको भी जानते नहीं थे। 100प्रतिशत मिसअंडरस्टैंडिंग कर दिया है। जिससे मनुष्य 100प्रतिशत पति(त) बन जाते हैं। अनेक मतें हैं। नही ंतो वास्तव ेमं कोई सन्यासी को गीता आदि पढ़ने का अधिकार ही नही है। उनका धर्म ही अलग है। गीता तो उनका शास्त्र है नहीं। गीता तुम्हारा शास्त्र है जो तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते हो। उन्होंने तेा सन्यास कर दिया है। वह हैं ही निवृत्ति मार्ग वाले। गीता पढ़ने का अधिकार ही नहीं। तुम हो प्रवृत्तिमार्ग वाले। पहले तुम्हारा पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था। अभी अपवित्र बन गए हो। अभी फिर पवित्र बनना है। बाप तो एवर पवित्र है। वह आते हैं मत देने। वह लोग अपन को कितना पवित्र समझते हैं। बाप कहते हैं इस समय तो और ही तमोप्रधान बन गए हैं। पहले फिर भी सतोप्रधान थे। जैसे हम पहले सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने हैं। जो2 भी आते हैं पोप,पादरी आदि पहले सतोप्रधान होते हैं। फिर एडीशन होते2 सारा झाड़ तमोप्रधान हो जाता है। अभी तो जड़जड़ीभूत अवस्था में है। जड़जड़ीभूत तमोप्रधान को कहा जाता है। तुम बच्चे समझते हो हम सतोप्रधान थे फिर नम्बरवार तमोप्रधान बने हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। नम्बरवार ही बनते जावेंगे ड्रामाअनुसार। डिटेल तो बहुत है। जैसे बीज है। उनको पता है कैसे झाड़ निकलता है। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का राज बाप ही बताते हैं। बागवान भी वही है। जानते हैं हमारा बाग कैसा अच्छा था। बाप को तो नालेज है ना। कितना फर्स्टक्लास बगीचा था। खुदाई बगीचा था। शैतान कहा ही जाता है रावण राज्य को। बड़ा युक्ति से समझाना पड़ता है। फट से सीधा ऐसे नहीं कहना है हिंदू कोई धर्म नहीं है। तो ही बिगरेंगे। बड़ा युक्ति से अक्षर निकालनी चाहिए ;क्योंकि तमोप्रधान बुद्धि है ना। नही ंतो मारने–पीटने लग पड़ते हैं। यह दुनियां ही मारा–मारी का है। जहां–तहां मारा–मारी लगी पड़ी है। अभी बाकी एटमिक बम रही पड़ी हैं वह भी तैयार कोहर (हो कर) बैठे हैं। सभी समझते हैं यह कोई रखने की चीज नहीं है। इनसे विनाश होना है जरूर। अगर विनाश न हो तेा सतयुग कैसे आवेगा? यह तो बिल्कुल क्लीयर है। भल दिखाते हैं महाभारत लड़ाई लगी। 5पांडव बचे.....वह भी गल मरे ;परंतु इसकी रिजल्टा कुछ भी नहीं। द्रौपदी को हराय दिया। फिर पांडवों के पास द्रौपदी कहां से आई? यह सब जैसे कहानी है। बर्थ नॉट अपेनी शास्त्र पढ़ते2 भारत बर्थ नॉट अपेनी बन गया है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। जो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। भारत को ही बहुत लूटा था अभी फिर रिर्टन में देते रहेंगे। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। विनाश में तो सब खतम हा ेजावेगा। जब तुम्हारा राज्य था तो दूसरा कोई राज्य था नहीं। हिस्ट्री मस्ट रिपीट। भारत फिर हैविन बनेगा। ल.ना. का राज्य यह स्वर्ग था ना। और कोई खंड का वहां नाम–निशान भी नहीं रहता है। अभी है कलियुग का अंत। फिर इन ल.ना. का राज्य आवेगा। हम फिर यह बनते है। बाप कहते हैं मैं आया हूं यह राजयोग सिखाने। कल्प3 अनेक बार तुम मालिक बने हो। इन्हों की सारी विघ्न में राजधानी थी। बड़ी अक्लमंद थे। वहां इनको वजीर आदि राय लेने की दरकार नहीं रहती। यह सब ड्रामा बना हुआ है। वैसे ही फिर होगा। कृष्ण के मंदिर को कहते हैं सुखधाम। श्रीकृष्ण है सतयुग का फर्स्ट प्रिंस वही फिर ल.ना. बनते है। यह किसको भी पता नही है। इसलिए ही कहा जाता है बिल्कुल ही ईडियट

बन गए हैं शिवबाबा आकर स्वर्ग ,हैविन ,शिवालय स्थापन करते हैं। वह लोग खुद भी कहते हैं क्राइस्ट से 3000वर्ष पहले पैराडाइज था। पहले तो एक ही आदि सनातन देवी देवता धर्म था। फिर और धर्म आये हैं। बच्चों को तो वंडर खाना चाहिए। बाप हमको बादशाही कैसे देते हैं। गीता में भी है सहजराजयोग ;परंतु पढ़ते ऐसे हैं जैसे बुद्धू। मनुष्य की बनाई हुई गीता। उनको फिर भगवान कैसे कहेंगे?उंच ते उंच भगवान तो एक ही है। उनका नाम ही हैं शिव। व्यास नाम थोड़े ही है। ज्ञान का सागर भी परमात्मा शिव ही है। व्यास को भक्ति का सागर कहेंगे। वह है अथॉर्टी। नालेजफुल। वह नालेज है भक्ति मार्ग की। यह है ज्ञान का सागर। ऑलमाइटी अथार्टी। भक्तिमार्ग में यह किसको भी पता नहीं है। रावण आलमाइटी अथॉर्टी है भक्ति का। बाप ऑलमाइटी अथार्टी है ज्ञान का। रात–दिन का फर्क है ना। भक्ति से है दुर्गति। फिर बाप आकर फल देते हैं। कितना सहज है ;परंतु समझेंगे वही जिन्होंने कल्प पहले समझा है। तुमने भी कल्प पहले समझा था। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। मेहनत भी है गुप्त। तुम गुप्त सेना हो ना। किसको भी पता नहीं है। इनको अंडरग्राउंड भी कहते हैं। अननोन वारियर्स भी तुम हो। तुमको कोई हथियार पवार नहीं है। बच्चे फील करते हैं यह मंजिल उंची है। जो बाप कहते हैं तुमको नंगा जाना है। और कोई की भी याद न आये। शरीर से अलग हो जाना पड़ता है। कुछ भी याद न आये। हियर नो ईविल.....मेहनत सारी यह है। याद में रहना। जिससे जन्म जन्मांतर के पाप कटेंगे। अजामिल जन्म जन्मांतर के पापों को कहा जाता है। कब से पाप शुरू हुए हैं। यह भी हिसाब हैं ना। सूरदास की तो एक कहानी बना दी है। इन आंखों को कोई थोड़े ही निकालना है। बाप ने तो तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र खोला है। आत्मा जो पतित बनी है उनको पावन बनना है। सिवाय एक बाप के और कोई की याद न रहे। इसमें मेहनत है। यह तो कल्प2 तुमने स्कॉलरशिप ली है। अभी भी लेंगे। बच्चों को खुशी होनी चाहिए। भगवान हमको पढ़ाते हैं। वह हमारा गाइड है। वह गुरू लोग गाइड हैं भक्ति के लिए। उनको तो रास्ते का पता ही नहीं है। रास्ता बताने वाला एक बाप ही है। मनुष्य कितने मूझे हुए हैं। साधू–संत आदि सब मूंझे हुए है ;परंतु अपना शास्त्रों का अंहकार कितना है। बाबा ने कहा था तुम उनको युक्ति से लिख सकते हो। जो पुजारी हैं वह अपन को पूज्य कैसे कहला सकते हैं? सतयुग में हैं पूज्य देवताएं। कलियुग में पुजारी मनुष्य। ज्ञान दिन भक्ति रात। वह लोग तो ब्रह्म में लीन होने पुरुषाथ्र करते हैं। समझते कुछ भी नहीं हैं। तुच्छ बुद्धि हैं। बाप कहते हैं मुझे ठिक्कर–भित्तर में कह देते हैं। मुझे तो ड्रामा पर बड़ी हंसी आती है। खेल देखता हूं कैसे बन जाती है। मैं कल्प2 आकर मनुष्य से देवता बनाता हूं। बाकी सभी नम्बरवार अपने2 सेक्शन में चले जावेंगे। बाप कल्प2 ऐसी2 बाते सुनाते हैं। नथिंग न्यू ।हम बेगर बन जाते हैं। फिर प्रिंस बनते हैं। यह भारत पर ही खेल है। बाकी इसमें है सब बायप्लाट्स। तुम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो। तुम्हारे जैसा इंजीनियर ,ऑफिसर कोई हो न सके। तुम वंडरफुल हो ना। सारे भारत को ही तुम निरोगी बनाते हो। वह डाक्टर लोग भी तुम्हारे आगे क्या हैं? तुम डाक्टर लोग को भी समझा सकते हो। हम योगबल से तुमको ऐसा बना देंगे जो तुम 21जन्म कब बीमार नही पड़ेंगे। ऐसे2 भाषण तुम हास्पिटल में करो। डाक्टर लोग सुनकर बहुत खुश होंगे। बोलो तुम भी पेशेंट हो। यह योग सीखो तो एवर निरोगी बन जावेंगे। तुम्हारे पर डाक्टर लोग तो कुर्बान जावेंगे। अभी तो अजन तुम्हारी बहुत सर्विस रही हुई है। बहुत मेहनत करनी पड़ती है। कैरेक्टर सुधारने लिए भी समझाओ। बोलो देखो देवताओं के कैसे कैरेक्टर्स थे। हमको बाप यह बना रहे हैं। डाक्टर लोग तो बहुत खुश होंगे। हम ऐसी युक्ति बताते हैं जो तुम 21जन्म लिए निरोगी बन जावेंगे। युक्ति भी बहुत सहज है। अखबार में भी तुम डाल सकते हो हम योगबल सिखाय सकते हैं जो कब बीमार नहीं पड़ेंगे। फिर तुमको बहु2 बुलायेंगे। आस्ते2 सर्विस वृद्धि को पाते रहेंगी। डाक्टर लोगों की सर्विस से तुम्हारा नाम बहुत निकलेगा। विचार करो हम उपर से नंगे आये थे। अभी फिर नंगे ही जाना है। देह सहित जो कुछ है सबसे आसक्ती निकल जाये। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग नमस्ते।